मैं ही हूँ

उछलती लहरों पर ठोस क़दम

maiṅ hī hūṅ. uchaltī lahroṅ par ṭhos qadam

It is I. Firm Steps on the Dashing Waves
(Second Edition)

by Bakhtullah

(Urdu—Hindi script)

© 2026 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage of
Jeff Jacobs https://pixabay.com/images/id-6190184/;
Prawny https://pixabay.com/images/id-1697359/;
illus. R. Gunther
https://freebibleimages.org/illustrations/ls-peter-water/ partially
modfied by AI (ChatGPT).

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

ख़ुदा से रिश्ता	3
मैं ही हूँ	6
आ!	7
मुझे बचाएँ!	9
शक मत करो	9
यक़ीनन आप अल-मसीह हैं!	10
इंजील, मत्ती 14:22-33	11

एक दिन एक बहुत बड़ा मोजिज़ा हुआ। 5000 मर्दों को बाल-बच्चों समेत एक झील के किनारे बिठाकर खाना खिलाया गया।

► **इसमें मोजिज़ा किया था? हर कोई खाना खिला सकता है।**
बेशक। लेकिन मोजिज़ा यह था कि सबके सब पाँच रोटियों और दो मछलियों से सेर हुए।

► **कौन इस तरह का काम कर सकता है?**
एक ही है। ईसा मसीह।

लेकिन यह एक अलग कहानी है। अब दिन ढल गया था, और जगह वीरान थी। लोग खिसककर अपने अपने घर जाने लगे। ईसा मसीह और उसके शागिर्द ख़िदमत करने से चूर-चूर हो गए थे।

► **क्या उन्होंने वहाँ डेरा लगाकर आराम किया?**

नहीं। ईसा मसीह अकसर ऐसा काम करता है जो हम नहीं सोचते। वह तो कश्ती लेकर आए थे। अब उस्ताद ने अपने शागिर्दों को ज़बरदस्ती कश्ती में बिठाकर कहा कि झील के पार चले जाओ। शागिर्द तो उसे अकेला छोड़कर जाना नहीं चाहते थे। उनका मन यह था कि अब हम इस मोजिज़े की ख़ुशी मनाएँ, एक दूसरे को मुबारकबाद कहें। और क्या यह अच्छा मौक़ा नहीं होगा कि उस्ताद सब पर ज़ाहिर करे कि वह अल-मसीह है। वही जिसका इंतज़ार ईमानदार सदियों से कर रहे हैं। लेकिन उनकी सोच सिर्फ़ सियासी थी। ईसा मसीह सियासी बातों में दिलचस्पी नहीं रखता। उसे सिर्फ़ एक बात अहम है।

► **वह क्या?**

ख़ुदा बाप से रिश्ता। यह पहली बात है।

ख़ुदा से रिश्ता

शागिर्दों को अलविदा करके ईसा मसीह रात के अंधेरे में साथवाले ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया।

► **वह अकेला क्यों गया?**

दुआ करने के लिए। ईसा मसीह वीरानी में इसलिए गया कि दिल खोलकर ख़ुदा बाप से बात करे। गो उस रात वह बहुत थका हुआ था तो भी वह पूरी रात अकेला रहा ताकि बात करते करते हलका हो जाए, ताज़ादम हो जाए, तक़वियत पाए।

कैसी बात! यह है हक़ीक़ी दुआ। ऐसी ही दुआ से हम ज़ाहिर करते हैं कि हम ख़ुदा के बच्चे हैं जो दुख-सुख के हर मामले में अपने हाथ उसकी

तरफ़ फैलाते हैं। तब आलमों का मालिक झुककर हमारी हकलाती हुई बातें ग़ौर से सुनता है।

जब बच्चे छोटे होते हैं तो माँ-बाप बच्चे की हर बात ग़ौर से सुनते हैं। पहली बार खड़े हुए, पहला क़दम रखा तो माँ-बाप उछलकर ख़ुशी मनाते हैं। पहले शाहकार—कोई तस्वीर, कोई छोटा-सा मिट्टी से बना खिलौना—माँ-बाप फ़ख़्र से उसकी तारीफ़ करते हैं।

देखो, हमारा आसमानी बाप ऐसे प्यार से हम पर ध्यान देता है। हमारा काम जो भी हो कुछ नहीं है तो भी वह फ़िकर करता है। वह हमारी ख़ुशी पर ख़ुश और हमारे दुख पर दुखी होता है।

तक़रीबन तीन बजे रात के वक़्त ईसा मसीह दुआ से फ़ारिग़ होकर पहाड़ से उतरा।

► **उतने में शागिर्द कहाँ पहुँच गए थे?**

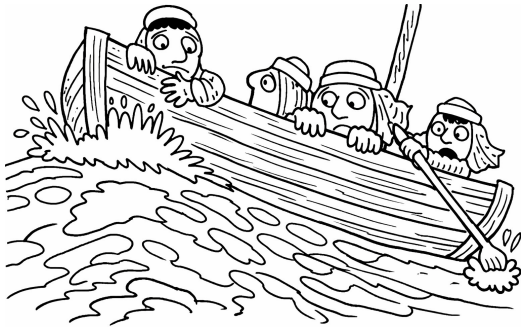

शागिर्द तो कश्ती पर सवार झील के बीच में पहुँच गए थे। वह दो या तीन किलोमीटर दूर थे। उनमें वह सुकून और आराम नहीं था जो उस्ताद में था। वह मुश्किल ही से कश्ती को आगे चला रहे थे, क्योंकि सख़्त हवा उनके ख़िलाफ़ चल रही थी। हवा के हर फूँक से लहरें बढ़ती जा रही थीं। सवारी बहुत तंग आ गए थे।

अचानक एक ने चीख़ मारी, "अरे, यह देखो! यह क्या है?"

सब सख़्त घबरा गए। लहरों पर चलते हुए कोई चीज़ चल रही है, हमारी तरफ़। कभी पानी की वादी में उतरती ओझल होती, कभी पानी के पहाड़ पर चढ़ती दिखती। शागिर्द थरथराने लगे। "यह कोई भूत है।" डर के मारे वह चीख़ने-चिल्लाने लगे।

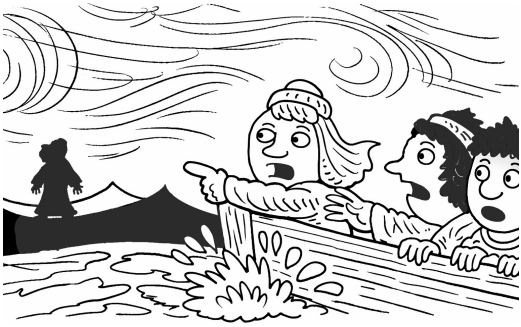

लेकिन यह क्या आवाज़ थी? एक जानी-पहचानी आवाज़। उस्ताद की ठोस आवाज़। "हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।"

इससे हम दूसरी बात सीख लेते हैं : ईसा मसीह का फ़रमान कि

मैं ही हूँ

"मैं ही हूँ," उसने कहा। जो तूफ़ान शागिर्दों के दिलों में गरज रहा था वह एकदम थम गया। उस्ताद के हुज़ूर उन्हें सुकून मिला। यह बात उनकी समझ से बाहर थी कि वह किस तरह पानी पर चल सकता है। जो भी हो, उस्ताद आ गया है।

जब ईसा मसीह फ़रमाता है "मैं ही हूँ" तब हम हौसला रख सकते हैं। अब तक तूफ़ान चल रहा है, हवा मुख़ालिफ़ है लेकिन वही मेरे साथ है। अब एक शागिर्द बनाम पतरस बोल उठा। पतरस काफ़ी जोशीला था। उस्ताद को देखते ही उसके अंदर जज़बा उभर आया। सोचा कि मैं भी उस्ताद के साथ पानी पर चलना चाहता हूँ। क्या उस्ताद ने ख़ुद नहीं कहा था कि जैसे उस्ताद वैसे उसके शागिर्द? वह बोला, "ख़ुदावंद, अगर आप ही हैं तो मुझे पानी पर अपने पास आने का हुक्म दें।"

ध्यान दें, उसने नहीं कहा कि मैं भी पानी पर चल सकता हूँ। नहीं, उसने कहा, अगर आप ही हैं तो मुझे अपने पास आने का हुक्म दें। वह जानता था कि यह उस्ताद के कहने पर ही हो सकता है।

ईसा मसीह ने फ़रमाया, "आ।"

इससे हम तीसरी बात सीख लेते हैं, ईसा मसीह का फ़रमान कि

आ!

अब पतरस को पूरा यक़ीन हुआ कि वह सचमुच पानी पर चल सकता है।

► **क्यों?**

इसलिए कि ख़ुद उस्ताद ने अपने पास आने का हुक्म दिया था। ज़िंदगी और मौत के तूफ़ानों पर हमें उसी के हुक्म की ज़रूरत है—वह हुक्म जो कहता है कि आ।

तब पतरस कश्ती से उतरा। वह पानी पर चलने लगा, उस्ताद की तरफ़। कितना ख़ुश था! कितना फ़ख़्र महसूस कर रहा था कि मैं भी पानी पर चल-फिर सकता हूँ। लेकिन अचानक वह पानी में धँसने लगा।

► **क्यों?**

अचानक उसे महसूस हुआ कि हाय, मेरी हालत कितनी नाज़ुक है। कभी लहरें उसे ऊपर आसमान की तरफ़ उछालती, कभी वह उसे नीचे, पानी की गहराइयों की तरफ़ ले जाती थीं। अब पतरस को लहरों का ज़ोर महसूस हुआ, और वह सख़्त घबरा गया।

► **वह क्यों घबरा गया?**

इसलिए कि उसकी आँखें ईसा मसीह पर लगी न रहीं। इर्दगिर्द के ख़तरों ने उसकी तवज्जुह अपनी तरफ़ खींच ली थी।

जब हम ईसा मसीह को टकटकी बाँधे देखते हैं, तब ही हमारे क़दम तूफ़ानी पानी पर भी ठोस रहते हैं। इस नाते से पतरस से ग़लती हुई। फिर भी उसने एक काम तो सही किया। वह चिल्ला उठा, "ख़ुदावंद, मुझे बचाएँ!"

इससे हम चौथी बात सीख लेते हैं : पतरस की पुकार कि

मुझे बचाएँ!

तब उस्ताद ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लिया। साथ साथ उसने सीधा असली बात छेड़ी। फ़रमाया, "ऐ कमएतक़ाद! तू शक में क्यों पड़ गया था?"

पतरस डर तो गया, लेकिन उसने सही हस्ती से मदद माँगी। उसने पुकारा कि मुझे बचाएँ तो ईसा मसीह ने फ़ौरन उसका हाथ पकड़ लिया।

इससे हम पाँचवीं बात सीख लेते हैं, यह कि

शक मत करो

► **तूफ़ान में ठोस क़दम रखने की कुंजी क्या है?**
यह कि हम शक न करें, हम ईमान रखें कि वह हमें महफ़ूज़ रख सकता है। उसको टकटकी बाँधे देखें।

► **शक का क्या मतलब है?**
डगमगाना। अपने इरादे में पक्का न रहना। कभी यह सोचना कभी वह। हिचकिचाना। पतरस न सिर्फ़ उस्ताद की तरफ़ देख रहा था बल्कि मौजों की तरफ़ भी। इसलिए वह डगमगाने लगा।

फिर दोनों कश्ती पर सवार हुए। हवा एकदम थम गई। उस्ताद की मौजूदगी में हवा ख़ुद बख़ुद थम गई।

इससे हम एक आख़िरी बात सीखते हैं : शागिर्दों का इक़रार कि

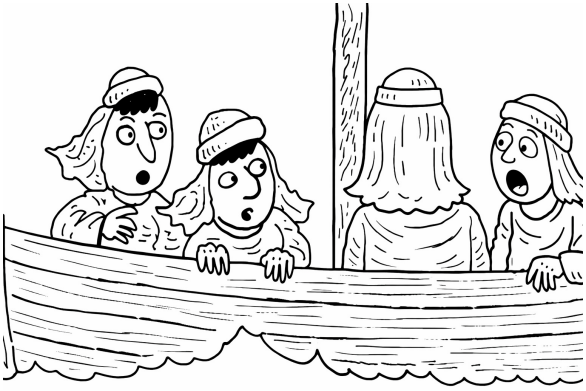

यक़ीनन आप अल-मसीह हैं!

शागिर्दों ने यह सब कुछ देखकर कहा, “यक़ीनन आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं!”

सदियों पहले पाक नविश्तों ने फ़रमाया था कि अल-मसीह आनेवाला है जो नजात देगा। वह एक अनोखी और लासानी हस्ती होगा। उसका ख़ास इख़्तियार होगा। उस वक़्त मरीज़ शफ़ा और अंधे देख पाएँगे, लँगड़े उछलकर चल सकेंगे। उससे एक नया ज़माना शुरू होगा।

जो नाम इन नविश्तों ने उसे दिया था वह ख़ुदा का फ़रज़ंद था।

अब हम नहीं कह सकते कि शागिर्दों को पूरी समझ आई। लेकिन एक बात उनकी समझ में आई : यह कि ईसा मसीह को ख़ास इख़्तियार,

लासानी क़ुव्वत है। ऐसा इख़्तियार, ऐसी क़ुव्वत जो सिर्फ़ और सिर्फ़ ख़ुदा की तरफ़ से हो सकती है। रहा यह सवाल :

- **क्या आपका ख़ुदा से ईसा मसीह का-सा रिश्ता है?**
- **तूफ़ानी लहरों पर चलते वक़्त वह फ़रमाता है कि मैं ही हूँ, आ। क्या आप उसकी आवाज़ सुनकर शक में उलझे रहते हैं? या आप तूफ़ानी पानी पर ठोस क़दम रखकर उसका हाथ पकड़ लेते हैं?**
- **क्या आपने अल-मसीह की क़ुदरत जान ली है? तब ही आप दुनिया की तूफ़ानों में महफ़ूज़ रह सकते हैं।**

इंजील, मत्ती 14:22-33

इसके ऐन बाद ईसा ने शागिर्दों को मजबूर किया कि वह कश्ती पर सवार होकर आगे निकलें और झील के पार चले जाएँ। इतने में वह हुजूम को रुख़सत करना चाहता था। उन्हें ख़ैरबाद कहने के बाद वह दुआ करने के लिए अकेला पहाड़ पर चढ़ गया। शाम के वक़्त वह वहाँ अकेला था जबकि कश्ती किनारे से काफ़ी दूर हो गई थी। लहरें कश्ती को बहुत तंग कर रही थीं क्योंकि हवा उसके ख़िलाफ़ चल रही थी।

तक़रीबन तीन बजे रात के वक़्त ईसा पानी पर चलते हुए उनके पास आया। जब शागिर्दों ने उसे झील की सतह पर चलते हुए देखा तो उन्होंने दहशत खाई। “यह कोई भूत है,” उन्होंने कहा और डर के मारे चीख़ें मारने लगे।

लेकिन ईसा फ़ौरन उनसे मुख़ातिब होकर बोला, “हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।”

इस पर पतरस बोल उठा, “ख़ुदावंद, अगर आप ही हैं तो मुझे पानी पर अपने पास आने का हुक्म दें।”

ईसा ने जवाब दिया, “आ।” पतरस कश्ती पर से उतरकर पानी पर चलते चलते ईसा की तरफ़ बढ़ने लगा। लेकिन जब उसने तेज़ हवा पर ग़ौर किया तो वह घबरा गया और डूबने लगा। वह चिल्ला उठा, “ख़ुदावंद, मुझे बचाएँ!”

ईसा ने फ़ौरन अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लिया। उसने कहा, “ऐ कमएतक़ाद! तू शक में क्यों पड़ गया था?”

दोनों कश्ती पर सवार हुए तो हवा थम गई। फिर कश्ती में मौजूद शागिर्दों ने उसे सिजदा करके कहा, “यक़ीनन आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं!”